Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

नेहरू की विदेश नीति पर कौटिल्य के विचारों का प्रभाव: एक समालोचनात्मक अध्ययन

डॉ. राकेश कुमार जायसवाल

असिस्टेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बदायूँ, उत्तर प्रदेश, भारत

सार (Abstract)
यह शोध-पत्र आधुनिक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति का समालोचनात्मक अध्ययन करते हुए यह परीक्षण करता है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतक कौटिल्य के विचारों का उस पर किस सीमा तक प्रभाव देखा जा सकता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित यथार्थवादी कूटनीति, शक्ति-संतुलन, राज्यहित, मंडल सिद्धांत तथा षाड्गुण्य नीति की तुलना नेहरू की आदर्शवादी, गुटनिरपेक्ष, पंचशील-आधारित और शांति-केंद्रित विदेश नीति से की गई है। अध्ययन का मूल निष्कर्ष यह है कि नेहरू की विदेश नीति का वैचारिक आधार नैतिक अंतरराष्ट्रीयतावाद, उपनिवेशवाद-विरोध, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और गुटनिरपेक्षता में निहित था, किंतु उसके व्यावहारिक पक्ष में कौटिल्यीय यथार्थवाद के कई तत्व परोक्ष रूप से विद्यमान थे। विशेषकर राष्ट्रीय हित की रक्षा, अंतरराष्ट्रीय शक्ति-संतुलन की समझ, परिस्थितिनिष्ठ निर्णय, और सामरिक विवेक के संदर्भ में नेहरू की नीति में ऐसा मिश्रित स्वरूप दिखाई देता है जिसमें आदर्शवाद और यथार्थवाद साथ-साथ चलते हैं। 1962 के भारत-चीन युद्ध ने इस विमर्श को और अधिक प्रासंगिक बनाया, क्योंकि इसने आदर्शवाद की सीमाओं तथा यथार्थवादी कूटनीति की आवश्यकता को उजागर किया। इस प्रकार, यह शोध निष्कर्षित करता है कि नेहरू और कौटिल्य के बीच प्रत्यक्ष वैचारिक अनुकरण का संबंध भले स्पष्ट न हो, परंतु भारतीय विदेश नीति के दीर्घकालिक विकास में दोनों की बौद्धिक विरासतें अंतःसलिल रूप में आज भी सक्रिय हैं।

मुख्य शब्द: नेहरू, कौटिल्य, विदेश नीति, अर्थशास्त्र, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, यथार्थवाद, आदर्शवाद

1. प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत को केवल आंतरिक राष्ट्र-निर्माण की चुनौती का सामना नहीं करना था, बल्कि विश्व-राजनीति के उभरते शीतयुद्धीय परिदृश्य में अपनी स्वतंत्र पहचान भी निर्मित करनी थी। इस ऐतिहासिक मोड़ पर भारत की विदेश नीति के निर्माण और दिशा-निर्धारण में पंडित जवाहरलाल नेहरू की केंद्रीय भूमिका रही। नेहरू ने ऐसी विदेश नीति का निर्माण किया जो औपनिवेशिक अनुभव से शिक्षा ग्रहण करती थी, नैतिकता और न्याय को महत्व देती थी, उपनिवेशवाद और नस्लवाद का विरोध करती थी तथा अंतरराष्ट्रीय शांति, सह-अस्तित्व और सहयोग को बढ़ावा देती थी।

दूसरी ओर, प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य का अर्थशास्त्र राज्यकला, प्रशासन, कूटनीति और रणनीति का एक अत्यंत परिपक्व और यथार्थवादी ग्रंथ माना जाता है। कौटिल्य ने राज्य को एक शक्ति-संगठन के रूप में देखा, जिसका प्रमुख उद्देश्य सुरक्षा, स्थिरता, विस्तार और समृद्धि सुनिश्चित करना है। उनके चिंतन में नैतिकता का स्थान पूरी तरह अनुपस्थित नहीं है, किंतु राज्यहित सर्वोच्च सिद्धांत के रूप में उपस्थित है।

यहीं से इस शोध-पत्र की केंद्रीय समस्या उभरती है: एक ओर नेहरू का नैतिक-आदर्शवादी अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण, दूसरी ओर कौटिल्य का शक्ति-आधारित यथार्थवाद। प्रश्न यह है कि क्या इन दोनों ध्रुवों के बीच कोई अंतर्संबंध संभव है? क्या नेहरू की विदेश नीति में कौटिल्य के विचारों की प्रत्यक्ष या परोक्ष छाया देखी जा सकती है? या फिर दोनों परंपराएँ एक-दूसरे के विरोध में खड़ी हैं?

यह शोध-पत्र इसी प्रश्न का समालोचनात्मक परीक्षण करता है। इसका उद्देश्य न तो नेहरू को एक छिपा हुआ कौटिल्यवादी सिद्ध करना है, और न ही यह दिखाना कि दोनों के बीच कोई संबंध नहीं था। बल्कि उद्देश्य यह है कि भारतीय विदेश नीति के वैचारिक विकास में आदर्शवाद और यथार्थवाद के अंतःसंबंधों को समझा जाए।

शोध प्रश्न

क्या नेहरू की विदेश नीति में कौटिल्य के विचारों का प्रभाव देखा जा सकता है?

शोध के उद्देश्य

1. कौटिल्य की विदेश नीति संबंधी अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
2. नेहरू की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांतों और व्यवहार का अध्ययन करना।
3. दोनों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक परीक्षण करना।
4. यह स्पष्ट करना कि नेहरू की विदेश नीति में कौटिल्यीय यथार्थवाद किस सीमा तक परिलक्षित होता है।

शोध-पद्धति

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों—अर्थशास्त्र, नेहरू के भाषणों, लेखों, ऐतिहासिक घटनाओं और आधुनिक विद्वानों के विश्लेषण—का उपयोग किया गया है।

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

नेहरू की विदेश नीति और कौटिल्य के राजनीतिक दर्शन पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है, किंतु दोनों के अंतर्संबंधों का अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। उपलब्ध साहित्य का अवलोकन इस शोध के लिए एक मजबूत बौद्धिक आधार प्रस्तुत करता है।

वी. पी. दत्त (V. P. Dutt) ने नेहरू की विदेश नीति को "moral internationalism" के रूप में व्याख्यायित किया है। उनके अनुसार, नेहरू का दृष्टिकोण केवल शक्ति-राजनीति पर आधारित नहीं था, बल्कि उसमें न्याय, शांति और उपनिवेशवाद-विरोध का स्पष्ट नैतिक तत्व था। दत्त यह भी स्वीकार करते हैं कि नेहरू आदर्शवादी होने के बावजूद परिस्थितियों के अनुसार व्यावहारिक निर्णय लेने में सक्षम थे।

एम. एस. राजन, जे. एन. दीक्षित और सुमित गांगुली जैसे विद्वानों ने भारतीय विदेश नीति के विकास को आदर्शवाद और यथार्थवाद के मिश्रण के रूप में देखा है। इनके अनुसार, स्वतंत्रता के शुरुआती दशकों में भारत ने नैतिक प्रतिष्ठा अर्जित करने का प्रयास किया, किंतु सुरक्षा चुनौतियों ने उसे क्रमशः अधिक यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए बाध्य किया।

कौटिल्य के संबंध में हंस मॉर्गेंथाऊ और आधुनिक यथार्थवादी विचारधारा के बीच तुलनाएँ अनेक विद्वानों ने प्रस्तुत की हैं। मॉर्गेंथाऊ ने भले सीधे कौटिल्य पर विस्तृत टिप्पणी न की हो, लेकिन उनके द्वारा प्रतिपादित "national interest defined in terms of power" की अवधारणा और कौटिल्य का राज्यहित-केंद्रित दृष्टिकोण वैचारिक समानता प्रदर्शित करते हैं। कई भारतीय और पाश्चात्य विद्वान कौटिल्य को प्राचीन भारतीय यथार्थवाद का प्रतिनिधि मानते हैं।

कौटिल्य का प्रसिद्ध कथन—

"The king shall consider as his enemy the immediate neighbor."

—मंडल सिद्धांत की मूल संवेदना को व्यक्त करता है, जिसमें अंतरराज्यीय संबंधों का विश्लेषण शक्ति, दूरी और हित के आधार पर किया जाता है।

दूसरी ओर, नेहरू के भाषणों और लेखन में शांति, न्याय और मानवतावादी अंतरराष्ट्रीयता की आवृत्ति अधिक दिखाई देती है। नेहरू का यह विचार उल्लेखनीय है:

"Peace is not merely the absence of war but the presence of justice."

यह कथन उनकी विदेश नीति के नैतिक आधार की ओर संकेत करता है।

हालांकि साहित्य में कुछ विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि नेहरू की विदेश नीति की आलोचना 1962 के बाद इसलिए हुई क्योंकि उसमें यथार्थवादी सुरक्षा-चेतना का अभाव था। इसके विपरीत कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि नेहरू को केवल आदर्शवादी कहना एक सरलीकरण है, क्योंकि उन्होंने कश्मीर प्रश्न, राष्ट्रमंडल में बने रहना, कोरिया और स्वेज जैसे मुद्दों पर संतुलित तथा राष्ट्रीय हित-सम्मत नीतियाँ अपनाईं।

इस साहित्य समीक्षा से स्पष्ट है कि:

- नेहरू को सामान्यतः आदर्शवादी माना गया है;
- कौटिल्य को यथार्थवादी और शक्ति-केंद्रित राजनीतिक चिंतक के रूप में देखा गया है;
- किंतु भारतीय विदेश नीति के वास्तविक व्यवहार में दोनों परंपराओं के कुछ तत्वों का समावेश संभव है।

यही बिंदु इस शोध को प्रासंगिक बनाता है।

3. कौटिल्य की विदेश नीति: सिद्धांत और दृष्टिकोण

कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल शासन और अर्थव्यवस्था का ग्रंथ नहीं, बल्कि राज्यकला और विदेश नीति का एक सुव्यवस्थित सिद्धांत भी है। इसमें राज्य की सुरक्षा, विस्तार, कूटनीतिक रणनीति, गुप्तचर व्यवस्था, सैन्य नीति और अंतरराज्यीय संबंधों का अत्यंत व्यावहारिक विश्लेषण मिलता है। कौटिल्य के लिए राज्य का अस्तित्व, सुरक्षा और समृद्धि सर्वोच्च हैं।

(i) मंडल सिद्धांत

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत उनकी विदेश नीति का केंद्रीय तत्व है। इसके अनुसार, कोई भी राज्य एक अकेली इकाई नहीं होता, बल्कि वह अपने आस-पास स्थित राज्यों के मंडल में कार्य करता है। सामान्यतः निकटवर्ती राज्य प्रतिस्पर्धी या शत्रु माने जाते हैं, जबकि शत्रु के पड़ोसी को संभावित मित्र माना जाता है। यह सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंधों को आदर्शों के बजाय भू-राजनीति और हित के आधार पर समझता है।

मंडल सिद्धांत का महत्व इस बात में है कि वह राज्य को यह सिखाता है कि किसी भी संबंध की प्रकृति स्थिर नहीं होती; वह शक्ति-संतुलन, हित और परिस्थितियों के अनुसार बदलती है। आधुनिक भाषा में इसे क्षेत्रीय भू-राजनीतिक विश्लेषण का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है।

(ii) षाड्गुण्य नीति

कौटिल्य ने विदेश नीति में छह प्रमुख उपाय बताए, जिन्हें षाड्गुण्य नीति कहा जाता है:

1. संधि– समझौता करना
2. विग्रह – युद्ध या संघर्ष
3. यान – आक्रमण या शक्ति-प्रदर्शन हेतु प्रस्थान
4. आसन– प्रतीक्षा या तटस्थ रहना
5. संश्रय – किसी अधिक शक्तिशाली राज्य का आश्रय लेना
6. द्वैधीभाव – एक साथ दोहरी नीति अपनाना

यह नीति कौटिल्य की लचीलापन-आधारित कूटनीतिक समझ को दर्शाती है। वे किसी एक नैतिक सूत्र से विदेश नीति को बांधने के पक्षधर नहीं हैं। उनके लिए नीति का चुनाव स्थिति, शक्ति, अवसर और राज्यहित के आधार पर होना चाहिए।

(iii) यथार्थवाद और राज्यहित

कौटिल्य के अनुसार शासक को निरंतर सक्रिय रहना चाहिए:

"In the interests of the prosperity of the state, a king shall be ever active."

यह कथन स्पष्ट करता है कि राज्यहित, समृद्धि और सुरक्षा सर्वोपरि हैं। कौटिल्य के यहां आदर्शवाद की अपेक्षा व्यवहारिकता अधिक है। नैतिकता का उपयोग राज्यहित के अधीन है, न कि उसके ऊपर।

(iv) शक्ति और सुरक्षा

कौटिल्य के लिए विदेश नीति का मूलाधार शक्ति है—सैन्य शक्ति, आर्थिक शक्ति, प्रशासनिक दक्षता और गुप्तचर शक्ति। वे केवल बाह्य नीति की बात नहीं करते, बल्कि यह भी बताते हैं कि एक सुदृढ़ आंतरिक व्यवस्था के बिना प्रभावी विदेश नीति संभव नहीं। इस दृष्टि से उनका विचार आधुनिक राष्ट्रीय शक्ति की समग्र अवधारणा से मेल खाता है।

(v) कूटनीति और गुप्तचर

कौटिल्य ने दूतों, गुप्तचरों और सूचनात्मक तंत्र को अत्यंत महत्व दिया। वे जानते थे कि युद्ध केवल रणभूमि पर नहीं, बल्कि सूचना, छल, संवाद और रणनीति के स्तर पर भी लड़ा जाता है। इससे स्पष्ट है कि उनकी विदेश नीति बहुआयामी थी।

इस प्रकार, कौटिल्य की विदेश नीति मूलतः यथार्थवादी, शक्ति-सचेत, परिस्थिति-आधारित और राज्यहित-केंद्रित थी।

4. नेहरू की विदेश नीति: सिद्धांत और व्यवहार

जवाहरलाल नेहरू आधुनिक भारत की विदेश नीति के प्रमुख शिल्पकार थे। उनकी विदेश नीति भारत की सभ्यतागत विरासत, औपनिवेशिक अनुभव, स्वतंत्रता आंदोलन के मूल्यों और शीतयुद्धीय राजनीति की चुनौतियों से निर्मित हुई थी। नेहरू की दृष्टि में विदेश नीति केवल शक्ति-संघर्ष का साधन नहीं थी, बल्कि विश्वशांति, न्याय और नवस्वतंत्र राष्ट्रों की गरिमा की रक्षा का माध्यम भी थी।

(i) गुटनिरपेक्षता

नेहरू गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement) के प्रमुख प्रेरक नेताओं में से थे। शीतयुद्ध के दौर में जब विश्व अमेरिका और सोवियत संघ के दो ध्रुवों में विभाजित हो रहा था, नेहरू ने भारत के लिए ऐसी नीति चुनी जो किसी सैन्य गुट का हिस्सा न बने। यह तटस्थता नहीं थी, बल्कि स्वतंत्र निर्णय की नीति थी।

गुटनिरपेक्षता का उद्देश्य था:

- भारत की रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना,
- शीतयुद्धीय ध्रुवीकरण से बचना,
- नवस्वतंत्र देशों को तीसरी दुनिया के रूप में संगठित करना,
- वैश्विक शांति और निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना।

(ii) पंचशील सिद्धांत

1954 में भारत और चीन के बीच पंचशील सिद्धांतों की घोषणा हुई। ये पाँच सिद्धांत थे:

1. एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान
2. परस्पर आक्रमण न करना
3. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना
4. समानता और परस्पर लाभ
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

पंचशील ने नेहरू की विदेश नीति को नैतिक प्रतिष्ठा प्रदान की। यह केवल भारत-चीन संबंधों का आधार नहीं था, बल्कि विश्व राजनीति में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का एक वैकल्पिक दर्शन भी माना गया।

(iii) अंतरराष्ट्रीय शांति और सहयोग

नेहरू युद्ध-विरोधी थे और उनका विश्वास था कि आधुनिक विश्व परस्पर निर्भरता का विश्व है:

"We live in a world of interdependence."

इस दृष्टिकोण के तहत उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की भूमिका का समर्थन किया, उपनिवेशवाद का विरोध किया, नस्लीय भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई और कोरिया, वियतनाम, स्वेज संकट जैसे मुद्दों पर संतुलित मध्यस्थतापूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास किया।

(iv) उपनिवेशवाद-विरोध और एशियाई-अफ्रीकी एकजुटता

नेहरू की विदेश नीति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष था—औपनिवेशिक शक्तियों का विरोध और एशियाई-अफ्रीकी देशों की स्वतंत्रता का समर्थन। बांडुंग सम्मेलन (1955) और बाद के गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की भूमिका इसी संदर्भ में समझी जाती है।

(v) व्यवहारिक पक्ष

यद्यपि नेहरू को अक्सर आदर्शवादी कहा जाता है, परंतु उनके निर्णयों में कई व्यावहारिक तत्व स्पष्ट दिखाई देते हैं। उदाहरणतः:

- भारत का राष्ट्रमंडल में बने रहना,
- कश्मीर प्रश्न को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सावधानी से उठाना,
- रक्षा और औद्योगिक क्षमता निर्माण पर बल,
- आवश्यकता के अनुसार दोनों महाशक्तियों से संबंध बनाए रखना।

अतः नेहरू की विदेश नीति को केवल आदर्शवाद तक सीमित करना उचित नहीं होगा। उसमें नैतिकता और राष्ट्रीय हित का जटिल संतुलन विद्यमान था।

5. तुलनात्मक विश्लेषण: समानताएँ

यद्यपि कौटिल्य और नेहरू अलग-अलग युगों, परिस्थितियों और बौद्धिक परंपराओं से आते हैं, फिर भी उनके बीच कुछ उल्लेखनीय समानताएँ रेखांकित की जा सकती हैं।

(i) राष्ट्रीय हित की केंद्रीयता

पहली दृष्टि में नेहरू की विदेश नीति नैतिक आदर्शों से प्रेरित दिखाई देती है, जबकि कौटिल्य की नीति राज्यहित से। किंतु गहराई से देखने पर स्पष्ट होता है कि नेहरू भी अंततः भारत की स्वतंत्रता, सुरक्षा, प्रतिष्ठा और स्वायत्तता की रक्षा को सर्वोपरि मानते थे।

गुटनिरपेक्षता स्वयं राष्ट्रीय स्वायत्तता की रक्षा का साधन थी। इस अर्थ में दोनों के यहां राष्ट्रीय हित केंद्रीय है, भले उसकी अभिव्यक्ति अलग हो।

(ii) संतुलन की नीति
कौटिल्य शक्ति-संतुलन की राजनीति को समझते हैं। नेहरू शीतयुद्धीय गुटों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करते हैं। कौटिल्य के यहां यह संतुलन प्रत्यक्ष सामरिक-राजनीतिक है; नेहरू के यहां यह गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता के रूप में प्रकट होता है। दोनों स्थितियों में उद्देश्य है—राज्य को किसी एक शक्ति के नियंत्रण में जाने से बचाना।

(iii) परिस्थितिनिष्ठ व्यावहारिकता
कौटिल्य परिस्थितियों के अनुसार नीति-परिवर्तन की वकालत करते हैं। नेहरू, आदर्शवाद के बावजूद, व्यवहार में कई बार व्यावहारिक बने। उन्होंने हर मुद्दे पर एक जैसी प्रतिक्रिया नहीं दी। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनका आचरण कई बार परिस्थितियों के अनुरूप बदलता दिखता है।

(iv) शांति को साधन के रूप में देखना
कौटिल्य शांति को स्थायी नैतिक आदर्श के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति-संगठन और राज्यहित की पूर्ति के लिए उपयोगी अवस्था के रूप में देखते हैं। नेहरू शांति को नैतिक मूल्य मानते हैं, किंतु साथ ही यह भी समझते हैं कि युद्ध से विकास और राष्ट्र-निर्माण बाधित होता है। इस प्रकार दोनों ही शांति को महत्व देते हैं, हालांकि उनकी दार्शनिक पृष्ठभूमि भिन्न है।

(v) आंतरिक शक्ति और बाह्य नीति का संबंध
कौटिल्य मानते हैं कि सुदृढ़ आंतरिक शासन के बिना प्रभावी विदेश नीति संभव नहीं। नेहरू भी औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक विकास, लोकतांत्रिक संस्थाओं और आर्थिक स्वावलंबन को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा का आधार मानते थे। यह समानता महत्वपूर्ण है।

6. तुलनात्मक विश्लेषण: भिन्नताएँ
समानताओं के बावजूद, कौटिल्य और नेहरू के बीच मूलभूत भिन्नताएँ भी हैं, जिन्हें रेखांकित किए बिना यह अध्ययन अधूरा रहेगा।

(i). दार्शनिक आधार
कौटिल्य की विदेश नीति शक्ति, सुरक्षा और राज्यहित पर आधारित है। नेहरू की विदेश नीति नैतिकता, न्याय, उपनिवेशवाद-विरोध, शांति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से प्रेरित है। कौटिल्य का दृष्टिकोण मूलतः यथार्थवादी है; नेहरू का दृष्टिकोण नैतिक-आदर्शवादी अंतरराष्ट्रीयतावाद से प्रभावित है।

(ii). शत्रु और मित्र की अवधारणा
कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में पड़ोसी राज्य को संभावित शत्रु माना जाता है। नेहरू इसके विपरीत पड़ोसी देशों, विशेषकर चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने में विश्वास रखते थे। "Hindi-Chini Bhai-Bhai" का वातावरण इसका उदाहरण है। यहीं बाद में सबसे बड़ी चुनौती भी सामने आई।

(iii). नीति की नैतिकता
कौटिल्य के यहां नैतिकता उपयोगितावादी है; नेहरू के यहां नैतिकता एक घोषित सिद्धांत है। नेहरू अंतरराष्ट्रीय राजनीति में न्याय, समानता और सह-अस्तित्व को मूल मूल्य मानते थे। कौटिल्य के लिए ये मूल्य राज्यहित के अधीन हैं।

(iv). सैन्यवाद और बल-प्रयोग
कौटिल्य युद्ध, छल, गुप्तचर और सामरिक आक्रमण को वैध उपकरण मानते हैं। नेहरू बल-प्रयोग को अंतिम विकल्प के रूप में देखते थे और कूटनीतिक समाधान को प्राथमिकता देते थे। हालांकि भारत ने आवश्यकता पड़ने पर बल-प्रयोग किया, लेकिन नेहरू की घोषित नीति सैन्य विस्तारवाद की नहीं थी।

(v). अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की कल्पना

कौटिल्य की सोच एक बहु-राज्यीय प्रतिस्पर्धी व्यवस्था पर आधारित है, जहां शक्ति संबंध मुख्य हैं। नेहरू संयुक्त राष्ट्र, अंतरराष्ट्रीय कानून और बहुपक्षीय सहयोग से संचालित विश्व व्यवस्था की कल्पना करते थे। यह आधुनिक वैश्विक शासन की अवधारणा के अधिक निकट है।

7. आलोचनात्मक विश्लेषण

नेहरू की विदेश नीति का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वे एक नवस्वतंत्र राष्ट्र के नेता थे, जो औपनिवेशिक दमन से उबरकर विश्व मंच पर नैतिक प्रतिष्ठा अर्जित करना चाहता था। इसलिए उनकी विदेश नीति में आदर्शवाद का होना स्वाभाविक था। परंतु आलोचनात्मक दृष्टि से देखने पर यह भी स्पष्ट होता है कि आदर्शवाद हमेशा पर्याप्त नहीं था।

(i) आदर्शवाद की शक्ति

नेहरू की विदेश नीति ने भारत को नैतिक नेतृत्व प्रदान किया। उपनिवेशवाद-विरोध, नस्लवाद-विरोध, शांति, निरस्त्रीकरण और गुटनिरपेक्षता के मुद्दों पर भारत ने विश्व में एक सम्मानजनक स्थान अर्जित किया। इससे भारत की "soft power" मजबूत हुई और नवस्वतंत्र देशों के बीच उसकी छवि एक सिद्धांतनिष्ठ राष्ट्र के रूप में बनी।

(ii) आदर्शवाद की सीमाएँ

किन्तु विदेश नीति केवल नैतिकता से संचालित नहीं हो सकती। सुरक्षा, सीमा, सैन्य तैयारी और भू-राजनीतिक समझ की भी उतनी ही आवश्यकता होती है। 1962 का चीन-भारत युद्ध इस तथ्य का सबसे बड़ा प्रमाण बना। पंचशील और मैत्रीपूर्ण भाषा के बावजूद चीन ने सीमा पर आक्रमण किया, जिससे नेहरू की चीन-नीति की कठोर आलोचना हुई।

यहाँ कौटिल्य का मंडल सिद्धांत और पड़ोसी-राज्यों के प्रति सावधानी की भावना अधिक यथार्थवादी प्रतीत होती है। यदि नेहरू ने चीन के संदर्भ में अधिक सतर्क, शक्ति-सचेत और सामरिक दृष्टिकोण अपनाया होता, तो संभवतः स्थिति भिन्न होती—यह तर्क अनेक विश्लेषकों द्वारा दिया गया है।

(iii) नेहरू: सिद्धांत में आदर्शवादी, व्यवहार में यथार्थवादी?

यह आकलन अक्सर उद्धृत किया जाता है:

"Nehru was an idealist in theory but a realist in practice."

इस कथन में आंशिक सत्य निहित है। नेहरू ने गुटनिरपेक्षता के माध्यम से भारत की रणनीतिक स्वायत्तता बचाई, महाशक्तियों से संतुलित संबंध बनाए, और अनेक मामलों में व्यावहारिक नीति अपनाई। इसलिए उन्हें पूर्णतः अव्यावहारिक आदर्शवादी कहना अनुचित होगा। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि कुछ प्रमुख सुरक्षा मुद्दों—विशेषकर चीन के मामले में—उनकी नीति पर्याप्त यथार्थवादी नहीं थी।

(iv) कौटिल्य की प्रासंगिकता

कौटिल्य का महत्व इस तथ्य में है कि वे हमें याद दिलाते हैं कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता के साथ-साथ शक्ति, सुरक्षा, गुप्तचर, तैयारी और सामरिक विवेक भी अनिवार्य हैं। आधुनिक भारत की विदेश नीति, विशेषकर उत्तर-नेहरू काल में, अधिक स्पष्ट रूप से इसी दिशा में आगे बढ़ती दिखाई देती है।

(v) समकालीन संदर्भ

आज की भारतीय विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता, बहुध्रुवीय संतुलन, पड़ोसी देशों के साथ जटिल संबंध, क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन, आर्थिक कूटनीति और सुरक्षा-चिंता—ये सभी तत्व दिखाई देते हैं। यह स्थिति बताती है कि नेहरू का आदर्शवाद और कौटिल्य का यथार्थवाद, दोनों ही आधुनिक विदेश नीति की समझ के लिए आवश्यक हैं।

8. निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्न निष्कर्ष उभरते हैं:

1. नेहरू ने प्रत्यक्ष रूप से कौटिल्य का अनुसरण नहीं किया।

उनकी विदेश नीति का वैचारिक आधार आधुनिक अंतरराष्ट्रीयतावाद, राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद-विरोध और शांति के सिद्धांतों में था।

2. फिर भी नेहरू की विदेश नीति में कौटिल्यीय यथार्थवाद के तत्व परोक्ष रूप में मौजूद थे।
राष्ट्रीय हित, रणनीतिक स्वायत्तता, शक्ति-संतुलन, परिस्थितिनिष्ठ व्यवहार और आंतरिक शक्ति-निर्माण जैसे पक्ष इस बात की पुष्टि करते हैं।
3. कौटिल्य और नेहरू विरोधी ध्रुव मात्र नहीं हैं; वे भारतीय विदेश नीति की दो पूरक बौद्धिक परंपराएँ भी हैं।
एक राज्य को नैतिक वैधता देता है, दूसरा उसे सुरक्षा और व्यवहारिक दिशा प्रदान करता है।
4. 1962 का भारत-चीन युद्ध इस विमर्श की केंद्रीय घटना है।
इसने दिखाया कि नैतिक आदर्शवाद यदि सामरिक तैयारी और यथार्थवादी आकलन से न जुड़ा हो, तो विदेश नीति कमजोर पड़ सकती है।
5. आधुनिक भारत की विदेश नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के मिश्रण पर आधारित है।
यही मिश्रण उसे विशिष्ट बनाता है। भारत न तो केवल शक्ति-राजनीति का पक्षधर है और न ही केवल नैतिक उपदेशों का; वह राष्ट्रीय हित और वैश्विक दायित्व के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है।
अतः समग्र रूप से कहा जा सकता है कि नेहरू और कौटिल्य, दोनों की बौद्धिक विरासतें आज भी भारतीय विदेश नीति के अध्ययन और व्यवहार में प्रासंगिक हैं। नेहरू ने भारत को नैतिक आवाज दी, जबकि कौटिल्य हमें शक्ति और रणनीति का महत्व समझाते हैं। एक सम्यक भारतीय विदेश नीति के लिए दोनों का संतुलित समावेश आवश्यक है।

संदर्भ (References)

1. Kautilya. (1992). *Arthashastra* (R. Shamasastry, Trans.). Government Press.
2. Nehru, J. (1946). *The discovery of India*. Oxford University Press.
3. Dutt, V. P. (1984). *India's foreign policy*. Vikas Publishing House.
4. Morgenthau, H. J. (1948). *Politics among nations: The struggle for power and peace*. Alfred A. Knopf.
5. Rajan, M. S. (1993). *Studies on India's foreign policy*. ABC Publishing House.
6. Dixit, J. N. (2003). *India's foreign policy and its neighbours*. Gyan Publishing House.
7. Ganguly, S. (2010). *India's foreign policy: Retrospect and prospect*. Oxford University Press.